SRI SHIRDI SAI BABA TEMPLE
(Non – Profit Organization Tax Id No. 32-0064813)
28875 W . 7 Mile Road, Livonia MI 48152 Phone :1-866-BABA-789

Shri Hanuman Chalisa Chanting by Devotees

Tue Mar 28 At 745PM and Wed Mar 29 to Apr 4 at 7PM

श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनऊं रघुबर विमल जसु, जो दायक फल चारि ॥ १ ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन - कुमार ॥
बल बुद्धि विधा देहु मोहिं, हरहु क्लेश विकार ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ १ ॥
रामदुत अतुलित बल धामा, अंजनि -पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ॥ ४ ॥
हाथ वज्र और ध्वजा विराजै, काँधे मूंज जनेऊ साजै ॥ ५ ॥
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥ ६ ॥
विधावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥

सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा , विकट रुप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥
भीम रुप धरि असुर संहारे , रामचन्द्र के काज संवारे ॥ १० ॥
लाय सजीवन लखन जियाये , श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥ ११ ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई , तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥ १२ ॥
सहस बदन तुम्हरो यस गावैं , अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १३ ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा , नारद सारद सहीत अहीसा ॥ १४ ॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते , कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा , राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना , लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ १७ ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू , लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं , जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥ १९ ॥
दुर्गम काज जगत के जेते , सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥
राम दुआरे तुम रखवारे , होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना , तुम रक्षक काहू को डरना ॥ २२ ॥
आपन तेज सम्हारो आपै , तीनो लोक हाँक ते काँपै ॥ २३ ॥
भूत पिशाच निकट नहीं आवै , महावीर जब नाम सुनावैं ॥ २४ ॥

नासै रोग हरे सब पीरा , जपत निंरतर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥
संकट से हनुमान छुड़ावै , मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥
सब पर राम तपस्वी राजा , तिनके काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥
और मनोरथ जो कोई लावै , सोई अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥
चारों युग परताप तुम्हारा , है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे , असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम जनम के दु:ख बिसरावै ॥ ३३ ॥
अन्त काल रघुपति पुर जाई , जहाँ जन्म हरि - भक्त कहाई ॥ ३४ ॥
और देवता चित न धरई , हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥
संकट हरै मिटे सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥
जै जै जै हनुमान गोसाई , कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ ३७ ॥
यह सत बार पाठ कर सोई , छुटहिं बंदि महासुख होई ॥ ३८ ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा , होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा , कीजै नाथ हृदय महं डेरा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन ,
मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित ,
हृदय बसहु सुर भूप ॥